कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

धरती कब तक घूमेगी - नोट्स

लेखक : साँवर दइया (राजस्थानी भाषा के प्रमुख कहानीकार)

भाषा : राजस्थानी मूल, लेखक द्वारा हिंदी में अनुवाद

प्रकाशन : 'समकालीन भारतीय साहित्य' (अप्रैल-जून 1983)

कहानी का विषय / थीम :

वृद्धा सीता के जीवन और परिवार में होने वाली मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक जटिलताएँ।

परिवार में सम्मान, प्यार और जिम्मेदारी की कमी।
बुजुर्गों के प्रति बेटों का व्यवहार और घरेलू संघर्ष।
भोजन (रोटी) और भरण-पोषण के माध्यम से पारिवारिक संबंधों का प्रतीक।

स्वतंत्रता, अकेलेपन और आत्मसम्मान का महत्व।

मुख्य घटनाएँ :

सीता की भावनाएँ :

घर, परिवार और बच्चों के बीच अकेलापन महसूस करना।

जीवन में "कुछ कमी" का एहसास।

रोज़मर्रा की चीज़ें – दो वक्त की रोटी – पर्याप्त नहीं, भावनात्मक संतुष्टि भी जरूरी।

कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

बेटों का व्यवहार :

तीन बेटे : कैलास, नारायण और बिज्जू।
माँ के प्रति प्रेम और देखभाल की कमी।
भोजन और रहने का फैसला बेटे आपस में बाँट लेते हैं, बिना माँ की राय पूछे।

घरेलू संघर्ष :

बेटों और बहुओं के बीच झगड़े।
बच्चों का खेल और घर में असंतुलन।
सीता अपने बच्चों के साथ बिताए समय की याद करती हैं।

सीता की प्रतिक्रिया :

धीरे-धीरे आत्मसम्मान का एहसास।
निर्णय : परिवार की ज़रूरतों के लिए खुद को बंधा नहीं रखें।
अंततः घर छोड़कर स्वतंत्रता की ओर रवाना।

कहानी का मुख्य संदेश / सीख :

मानव जीवन केवल भौतिक सुखों (रोटी) तक सीमित नहीं।
भावनात्मक और मानसिक संतोष जीवन के लिए जरूरी।
वृद्धों के प्रति परिवार की जिम्मेदारी केवल भरण-पोषण तक सीमित नहीं होनी चाहिए।
स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का महत्व।
परिवार में झगड़े और भेदभाव बुजुर्गों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं।

#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

कहानी का पात्र :

सीता : मुख्य पात्र, वृद्धा, परिवार की देखभाल करती हैं।

तीन बेटे : कैलास, नारायण, बिज्जू – माता के प्रति जिम्मेदारी कम।

बहुएँ और पोते : परिवार की जटिलता में शामिल।

कहानी का अंत :

सीता ने महसूस किया कि आकाश और धरती विशाल हैं, और घर की सीमाओं और झगड़ों से मुक्त होना जरूरी है।

स्वतंत्र होकर वह घर छोड़ देती हैं और खुली हवा में रवाना होती हैं।

कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

धरती कब तक घूमेगी – सारांश

कहानी **"धरती कब तक घूमेगी"** में लेखक **साँवर दइया** ने वृद्धा सीता के **जीवन और परिवार** के भीतर होने वाले **संघर्षों** को गहराई से प्रस्तुत किया है।

सीता अपने **बच्चों और उनके परिवार** में रहते हुए, भले ही **दो वक्त की रोटी मिलती हो,** फिर भी वह **मानसिक और भावनात्मक रूप** से **असंतुष्ट** महसूस करती हैं। घर में **प्रेम, आत्मीयता और समझदारी** की कमी है। बेटों ने माँ के **रहने और खाने** का निर्णय आपस में बाँट लिया, बिना **सीता की राय** पूछे।

सीता अनुभव करती हैं कि जीवन केवल **भौतिक चीज़ों (जैसे रोटी)** तक सीमित नहीं है। **भावनात्मक संतोष, स्वतंत्रता और सम्मान** भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। अंततः **सीता** यह समझती हैं कि अपने **आत्मसम्मान और मानसिक शांति** के लिए उन्हें **परिवार के झगड़ों और बंधनों से मुक्त** होना होगा। **वह घर छोड़कर स्वतंत्र होकर खुली हवा और विशाल आकाश की ओर चल पड़ती हैं।**

कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

धरती कब तक घूमेगी – Quick Revision Lines

लेखक : साँवर दइया (राजस्थानी भाषा के प्रमुख कहानीकार)

भाषा और स्रोत : कहानी मूलतः राजस्थानी भाषा में है; लेखक ने इसे हिंदी में स्वयं अनुवाद किया।

प्रकाशित: समकालीन भारतीय साहित्य (अप्रैल-जून 1983)।

महत्वपूर्ण लाइनें / Quick Revision Points

1. “सब कुछ है और कुछ भी नहीं है।” – जीवन में भौतिकता पर्याप्त नहीं।
2. “रोटी के अलावा भी आदमी की कुछ आवश्यकता हुआ करती है।” – भावनात्मक संतोष जरूरी।
3. “घर, घर ही प्रतीत होता था। आँगन में खेलते बच्चों की चिल्ल-पौं सुखद थी।” – प्रेम और आत्मीयता का महत्व।
4. “दो वक्त की रोटी खिलाना ही खुशी-खुशी कहाँ है!” – भरण-पोषण ही सब कुछ नहीं।
5. “महीना होते ही बेटा कह देता है – ‘यह घर छोड़, दूसरे घर जा!’” – वृद्धा के प्रति परिवार का गैर-जिम्मेदार व्यवहार।
6. “आज आकाश अनन्त था। धरती बहुत ही बड़ी थी।” – स्वतंत्रता और मानसिक शांति का प्रतीक।
7. “सीता अनुभव करती हैं कि जीवन केवल भौतिक चीज़ों तक सीमित नहीं है।”
8. “बेटों और बहुओं के बीच झगड़े बुजुर्गों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।”
9. “अवसर और परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं – जीवन में स्थिरता नहीं है।”
10. “आत्मसम्मान और स्वतंत्रता जीवन का मूल आधार हैं।”

कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

1. सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करती है ?
उत्तर : सीता अपने घर में इसलिए घुटन महसूस करती हैं क्योंकि वहाँ सिर्फ भरण-पोषण (दो वक्त की रोटी) मिलना ही सब कुछ नहीं है। घर में प्रेम, आत्मीयता और सम्मान की कमी है। बच्चे और बहुएँ अपने माता-पिता और दादी के साथ भावनात्मक संबंध नहीं रखते, झगड़े और भेदभाव घर में माहौल को तनावपूर्ण बना देते हैं।

2. पाली बदलने पर अपने घर दादी माँ के खाने को लेकर बच्चे खुश होते हैं जबकि उनके माता-पिता नाखुश। बच्चों की खुशी और माता-पिता की नाखुशी के कारण बताइए।
उत्तर :

बच्चों की खुशी : उन्हें दादी माँ के पास रहने और उनके साथ खाना खाने में आनंद आता है। उन्हें दादी की देखभाल, प्यार और सामंजस्य महसूस होता है।

माता-पिता की नाखुशी : वे यह मानते हैं कि खाना खाने और घर की व्यवस्था में दादी माँ का बारी-बारी जाना असुविधाजनक है। उनके लिए यह जिम्मेदारी और नियंत्रण का प्रश्न बन जाता है।

3. 'इस समय उसकी आँखों के आगे न तो अँधेरा था और न ही उसे धरती और आकाश के बीच घुटन हुई ।' – सप्रसंग व्याख्या करें।
उत्तर : सीता जब घर छोड़कर स्वतंत्र होकर खुली हवा और विशाल आकाश की ओर जाती हैं, तब उसे हल्का महसूस होता है। अब घर की सीमाओं, झगड़ों और दबावों से मुक्त होकर वह मानसिक शांति अनुभव करती हैं। न अँधेरा है और न घुटन – इसका अर्थ है कि अब उसका मन हल्का और मुक्त है।

कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

4. सीता का चरित्र चित्रण करें।

उत्तर : सीता एक वृद्ध महिला हैं, जो अपने परिवार की देखभाल करती हैं।

- वह संवेदनशील, सहनशील और भावनात्मक रूप से गहरी हैं।
- घर में झगड़े और बेटों की गैर-जिम्मेदारी के बावजूद धैर्य और आत्मसंयम रखती हैं।
- अपनी आत्मसम्मान और मानसिक शांति के लिए अंततः स्वतंत्रता की ओर बढ़ती हैं।
- उनका चरित्र प्रेम, बलिदान और आत्मसम्मान का प्रतीक है।

5. कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करें।

उत्तर : "धरती कब तक घूमेगी" शीर्षक का अर्थ है – जीवन में समय, परिवर्तन और परिस्थितियाँ लगातार चलती रहती हैं। कहानी में सीता का जीवन और परिवार की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। यह शीर्षक यह भी दर्शाता है कि जीवन में स्थिरता नहीं है, और व्यक्ति को अपने निर्णय और स्वतंत्रता के लिए समय-समय पर कदम उठाने पड़ते हैं।

6. कहानी का सारांश प्रस्तुत करें।

उत्तर : कहानी "धरती कब तक घूमेगी" में वृद्धा सीता अपने परिवार में भरण-पोषण तो पाती हैं, लेकिन प्रेम, सम्मान और भावनात्मक संतोष की कमी महसूस करती हैं। बेटे और बहुएँ आपस में झगड़ते हैं, और माता के रहने और खाने का निर्णय खुद ले लेते हैं। सीता धीरे-धीरे समझती हैं कि जीवन केवल रोटी या भौतिक आवश्यकताओं तक सीमित नहीं है। आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और मानसिक शांति के लिए वह घर छोड़कर खुली हवा और विशाल आकाश की ओर रवाना होती हैं।

कक्षा 10वीं – हिन्दी,वर्णिका भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#5. धरती कब तक घूमेगी (कहानी) - (साँवर दइया)

1. सीता की स्थिति बच्चों के किस खेल से मिलती-जुलती है? [2020AII, 2023AII]

उत्तर : सीता की स्थिति बच्चों के *'माई-माई रोटी दे'* वाले खेल से मिलती-जुलती है। इस खेल में एक बच्चा भिखारिन बनकर बारी-बारी से दूसरों के पास जाकर एक ही बात कहता है— *"माई माई रोटी दे।"*
उसे उत्तर मिलता है— *"यह घर छोड़, दूसरे घर जा।"*
सीता सोचती है, *"बिल्कुल यही स्थिति है मेरी। मैं भी इस भिखारिन जैसी हूँ। महीना होते ही बेटा कह देता है, 'भाई यह घर छोड़, दूसरे घर जा।' और मैं रवाना हो जाती हूँ... आगे वाले घर के लिए। वहाँ भी महीना पूरा होते ही वही आदेश सुनायी देता है— 'यह घर छोड़, दूसरे घर जा।'"*

2. सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करती है? [2011A, 2014AI, 2017AII, 2018AI, 2019AII, 2024AI]

उत्तर : सीता अपने ही घर में निम्नलिखित कारणों से घुटन महसूस करती है—

(1) बेटों का रवैया:
सीता के पति के मरते ही वह तुच्छ और निराश्रयी हो जाती है। उसके बेटे उसे बोझ समझने लगते हैं। माँ की देख-रेख और भरण-पोषण के लिए तीनों भाइयों ने एक-एक महीने का *पाला (पाली)* बाँध लिया। यह स्थिति उसे भिखारिन जैसी लगती है।

(2) बहुओं का कलह और कड़वी बातें:
सीता के तीन बेटे और तीन बहुएँ थीं जो आपस में हमेशा लड़ाई-झगड़ा करती रहती थीं। बहुओं की कड़वी बातें उसे चुभती रहती हैं।

(3) मन की व्यथा:
सीता किसी भी बेटे के साथ रहती है तो अन्तर्मन से दुःखी ही रहती है। अपनी ही संतान से वह विक्षुब्ध हो गई है और अपने मन की व्यथा किसी से कह नहीं सकती है। यही कारण है कि उसे अपने ही घर में घुटन महसूस होती है।

3. 'धरती कब तक घुमेगी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करें? [2015AII]

उत्तर : शीर्षक किसी भी रचना की पृष्ठभूमि होता है और उसकी सार्थकता उसके आकर्षण तथा रचना की पूर्ण व्याख्या में होती है। यह रचना के मूल भाव का संवहन करता है।

राजस्थानी भाषा के प्रमुख कहानीकार **साँवर दइया** द्वारा रचित *'धरती कब तक घूमेगी'* शीर्षक कहानी सामाजिक विडम्बनाओं को चित्रित करती है।

उपमा: धरती कील पर निरंतर घूमती रहती है। इसी प्रकार, माँ भी धरती की तरह अपनी संतान के बोझ को सहन कर लेती है।

मूल भाव : कहानी की नायिका सीता पति के मरने के बाद बेटों के इशारों पर एक महीने यहाँ और एक महीने वहाँ लुढ़कती रहती है। जब बेटों ने मासिक पचास रुपये देने का निर्णय लिया, तो सीता को लगा कि अब घुटन सहन नहीं हो पाती है। वह सोचने लगी कि बेटों के बीच वह कब तक ऐसे ही घूमेगी।

निष्कर्ष : अंततः एक दिन सीता रात्रि में घर से निकल जाती है। अतः, ये दृष्टान्त स्पष्ट करते हैं कि प्रस्तुत कहानी का शीर्षक उस माँ की दयनीय और अनिश्चित स्थिति को दर्शाते हुए सार्थक और सटीक है।

4. सीता को किस दिन लगा कि 'लापसी' बिलकुल फीकी है? 'लापसी' खाते समय उसे कैसा महसूस हो रहा था? [2022A]

उत्तर : सीता को *'नाहरसिंहजी वाले दिन'* को लगा कि 'लापसी' बिल्कुल फीकी है। 'लापसी' खाते वक्त उसे गले में अटकने जैसा महसूस हो रहा था।

5. सीता किस बुरे दिन की बात याद करती है? [2025AI]

उत्तर : सीता तीन बेटों की माँ है। एक दिन की बात है कि उसका पति जब मर गया तो उसके तीनों बेटों ने यह फैसला किया कि देख-भाल, खान-पान का भरण-पोषण सभी बेटे एक-एक महीना करेंगे।

6. बहुओं की आपसी लड़ाई पर सीता (माँ) की कैसी प्रतिक्रिया होती है? [2025AII]

उत्तर : सीता के तीन बेटे थे और तीन बहुएँ थीं। जब बहुएँ आपस में हमेशा लड़ाई-झगड़ा करती रहती थीं, तब यह देखकर सीता बहुत ही दुःखी रहती थी। वह मन ही मन गम खाकर चुपचाप सहन करती रहती थी।

7. अगले दिन सीता ने क्या किया? [2022AI]

उत्तर : अगले दिन जब बेटों ने यह तय किया कि वे हर महीने माँ को सिर्फ पचास रुपये देंगे, तो यह सुनकर सीता बहुत दुखी हो गई और रात में चुपचाप घर छोड़कर चली गई।